डिग्रियां व मेडल हासिल करने वाले स्टूडेंट्स

एकेटीयू का 13वां दीक्षांत समारोह : इसरो अध्यक्ष डॉ. एएस किरन कुमार को दी डीएससी की मानद उपाधि, राज्यपाल ने प्रदान किए मेडल

मेहनत का इनाम पाकर खिलखिलाए होनहार

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय का 13वां दीक्षांत समारोह बेटियों के नाम रहा। विभिन्न कोर्स के कुल 62 टॉपर्स में से 48 मेडल पर छात्राओं ने कब्जा जमाया। समारोह में इसरो के अध्यक्ष डॉ. एएस किरन कुमार को डॉक्टरेट ऑफ साइंस (डीएससी) की मानद उपाधि देकर सम्मानित किया गया। विवि से संबद्ध सूबे के 636 इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कॉलेजों के 64442 छात्र-छात्राओं को विभिन्न पाठ्यक्रम की डिग्री दी गई। इनमें 34 पीएचडी डिग्रीधारक भी शामिल रहे। डिग्री पाने वालों में सर्वाधिक 48,365 छात्र-छात्राएं बीटेक पाठ्यक्रम के थे। यह पहला मौका था जब विवि ने स्वायत्त संस्थानों के मेधावियों को भी मेडल दिया। समारोह में मुख्य अतिथि गृहमंत्री राजनाथ सिंह के साथ कुलाधिपति राम नाईक, कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक, प्रदेश के प्राविधिक शिक्षा मंत्री फरीद महफूज किदवई, विवि कुलसचिव केके चौधरी भी उपस्थित रहे।

636 कॉलेजों के **64442** स्टूडेंट्स को मिली डिग्री

गोमती नगर स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में शनिवार को आयोजित एकेटीयू के दीक्षांत समारोह में मेधावी छात्रा शमा परवीन को मेडल सौंपते केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह व राज्यपाल राम नाईक।

तकनीकी संस्थान करें सौर ऊर्जा का उपयोग : किदवई

प्रदेश के प्राविधिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) फरीद महफूज किदवई ने तकनीकी संस्थानों से 25 किलोवाट सौर ऊर्जा उत्पादन यूनिट, सोलर वाटर हीटर लगाने और बल्ब फ्यूज होने पर उनकी जगह एलईडी लाइट लगाने का आह्वान किया। कहा कि मिशन की थीम के तहत इस संबंध में जल्द ही आदेश भी जारी किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के तौर पर विकसित करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने दीक्षांत का लिबास (पोशाक) बदले जाने का स्वागत किया। उन्होंने डिग्रीधारी युवाओं को समर्पित करते हुए शेर पढ़ा- 'ए मादरे वतन मुझे एड़िया रगड़ने दे, मुझे यकीं है पानी यहीं से निकलेगा'।

'ऐसे तो छात्रों को देना पड़ेगा आरक्षण'

समारोह में विभिन्न कोर्स में मेडल के लिए लगातार बेटियों का नाम पुकारे जाने पर आखिरकार कार्यक्रम में कुलाधिपति राज्यपाल राम नाईक भी खुद को यह कहने से न रोक पाए कि अगर ऐसे ही छात्राएं अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती रहीं तो एक दिन छात्रों को आरक्षण की जरूरत पड़ सकती है। इतना सुनते ही हॉल में मौजूद छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे और पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा। उन्होंने कहा कि पिछले दीक्षांत से इस बार दो बदलाव हुए हैं। पहला विवि का नामकरण डॉ. कलाम के नाम पर किया गया और दीक्षांत की पोशाक बदल गई। उन्होंने कहा, नाम बदलने के बाद विश्वविद्यालय के काम भी डॉ. कलाम के नाम के अनुरूप होने चाहिए।

मानवता के लिए हो विज्ञान का प्रयोग

डॉ. एएस किरन कुमार ने कहा कि आज बहुत से छात्र-छात्राएं अच्छी शिक्षा पाकर विदेश में नौकरी के लिए जाते हैं, लेकिन हमें ऐसे भारत को विकसित करना होगा कि विदेशों से लोग यहां काम करने आएं। उन्होंने कहा कि विज्ञान और तकनीक की जितनी भी इनोवेशन्स हैं उनकी प्रेरणा प्रकृति से ही मिलती है। कम ऊर्जा से बेहतर परफॉर्म करने वाले उत्पादों को तैयार करने के लिए आज विभिन्न क्षेत्रों के इंजीनियर प्रेरणा पाने व नए आइडिया के लिए प्रकृति की तरफ रुख कर रहे हैं। मगर, हमें ध्यान रखना होगा कि जब भी किसी तकनीक को अपनाएं उसके दोनों पहलू देखें। हमें एनवायरमेंट फ्रेंडली टेक्नोलॉजी के साथ विकास की ओर बढ़ना होगा।

केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ ने कहा-

टैलेंट और टेक्नोलॉजी का गलत इस्तेमाल समाज के लिए घातक

लखनऊ (ब्यूरो)। केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी जिंदगी को सुगम बना रही है, लेकिन इसके गलत उपयोग से बड़ा खतरा भी है। तेजी से बढ़ता साइबर क्राइम भारत ही नहीं पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है। राजनाथ सिंह शनिवार को यहां गोमती नगर स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिवर्सिटी के 13वें दीक्षांत समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने छात्रों से जीवन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता और चरित्र निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. कलाम ने आम आदमी को साइंस और टेक्नोलॉजी की तरफ आकर्षित करने में बड़ी भूमिका निभाई है। जिंदगी में तकनीक का दखल लगातार बढ़ता जा रहा है। अब स्मार्ट फोन में इतने सॉफ्टवेयर आने लगे हैं जितने चंद्रमा पर भेजे गए पहले अंतरिक्ष यान में नहीं थे। अब महसूस किया जा रहा है टेक्नोलॉजी के बिना विकास और सुशासन संभव नहीं है। केंद्र सरकार ने फैसला किया है कि साढ़े तीन साल में पूरे सिस्टम को पारदर्शी बनाने के लिए ई-गवर्नेंस को पूरी तरह लागू किया जाएगा। टेक्नोलॉजी के मामले में भारत किसी से पीछे नहीं है। मशहूर आईटी कंपनियों के साथ ही गूगल और माइक्रोसॉफ्ट के हेड भारतीय मूल के हैं।

'इनफोसिस बनाम अलकायदा'

गृहमंत्री ने लेखक टॉमस फ्रीडमैन की पुस्तक के एक लेख 'इनफोसिस बनाम अलकायदा' का उल्लेख करते हुए कहा कि मशहूर आईटी कंपनी और आतंकी संगठन में कई समानताएं हैं। दोनों में मेधावी और समर्पित युवा काम करते हैं, दोनों के आगे बढ़ने का कालखंड एक है, दोनों की ग्लोबल नेटवर्किंग है। फर्क सिर्फ इतना है कि इनफोसिस का टैलेंट सृजन के काम में लगा है और अलकायदा का विध्वंस में। उन्होंने सवाल किया कि दोनों जगह काम करने वाले उच्च संस्थानों से पढ़कर निकले हैं, उनकी सोच में अंतर कहां से आया? जीवन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता नहीं होगी, सिद्धांतों पर चलने की सोच नहीं होगी तो तकनीक का इस्तेमाल समाज हित में नहीं हो सकता। शिक्षा केवल ज्ञान नहीं है, शिक्षा से व्यक्तित्व के समग्र विकास की अपेक्षा की जाती है।

● ज्ञान, शक्ति, वैभव नहीं, चरित्र से होती है पूजा

राजनाथ सिंह ने कहा कि ज्ञान, शक्ति और वैभव सबकुछ नहीं है। यदि ये ही सब कुछ होते तो रावण की पूजा होती। वह बहुत बड़े विद्वान थे, उनकी सोने की लंका थी, उन्होंने मौत को जीत रखा था। चरित्र ही वह फैक्टर है जिस कारण रावण के बजाए राम की पूजा होती है। उन्होंने कहा कि दीक्षांत, शिक्षा का अंत नहीं है, यह दीक्षा और संस्कार का प्रभावी माध्यम है। इसी के जरिये जीवन में संस्कारों का महत्व समझा जाता है।

● प्रकृति व राष्ट्र के शाश्वत नियम

गृहमंत्री ने कहा कि प्रकृति और राष्ट्र के कुछ शाश्वत नियम होते हैं। बेतहाशा विकास की होड़ में प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के रूप में सामने है। हमारे राष्ट्र और समाज के कुछ शाश्वत नियम हैं, जैसे 'यत् पिंडे, तत् ब्रह्मांडे' यानी जो जड़ में है वही चेतन में है, जो बड़ों में है वही छोटों में है और जो मेरे में है वही तेरे में है। दूसरा शाश्वत नियम है, वसुधैव कुटुम्बकम यानी पूरी दुनिया परिवार की तरह। इसमें जाति, पंथ, धर्म के नाम पर भेदभाव की कोई जगह नहीं है।

● सुपर पॉवर नहीं, विश्व गुरु बने भारत

राजनाथ सिंह ने कहा कि यदि कोई मुझसे पूछे कि भारत को क्या बनना चाहिए, सुपर सैन्य शक्ति, आर्थिक शक्ति या बौद्धिक ताकत। इसके जवाब में मैं कहूंगा कि भारत को विश्व गुरु बनना चाहिए। सैन्य शक्ति संपन्न हम अपनी सुरक्षा के लिए बनना चाहते हैं, दूसरों में दहशत पैदा करने के लिए नहीं। गुरु वह है जो अपने पास खड़े होने वालों को प्रेरित करता है। भारत पहले भी विश्व गुरु रहा है और इसमें दोबारा वही स्थान हासिल करने के सभी कारक मौजूद हैं। उन्होंने विदेशी दार्शनिकों और विद्वानों के कथनों का उल्लेख करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय प्रतिभाओं की उपलब्धियां गिनाईं।

अस्पताल में भर्ती मां की ख्वाहिश थी, इसलिए मेडल लेने आया

एक तरफ उजैर इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में मंच पर गोल्ड मेडल पा रहा था तो दूसरी तरफ राजधानी के ही एक अस्पताल में उसकी मां शमा आईसीयू में एडमिट थी। बीएचएमसीटी में टॉप करने वाले आगरा के हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ होटल एंड टूरिज्म के छात्र उजैर बलरामपुर का रहने वाला है। उजैर ने बताया कि दीक्षांत में आने के लिए उसके पिता अशफाक और मां दोनों ही काफी उत्साहित थे। घर में तैयारियां चल रही थीं। मां शमा की तबियत पहले से ही कुछ खराब थी लेकिन अचानक 18 जनवरी को वह और खराब हो गई। सारी तैयारियां छोड़कर पहले उन्हें गोंडा के एक अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वहां से लखनऊ भेज दिया गया। तब से वहां उनका इलाज चल रहा है। उजैर अपनी शिक्षिका सुवर्णा दासगुप्ता के साथ मेडल लेने समारोह में पहुंचे। किसी तरह दर्द को छिपाते हुए चेहरे पर मुस्कुराहट लाने की एक असफल कोशिश करते रहे। उजैर ने बताया कि वह शायद यहां मेडल लेने भी नहीं आता लेकिन उसके माता-पिता की इच्छा के चलते अस्पताल से कुछ समय निकालकर वह समारोह में शामिल हुआ।

झलकियां...

हाईस्कूल के स्टूडेंट्स भी हुए शामिल

दीक्षांत के दौरान बीकेटी से एक इंटर कॉलेज के भी कुछ छात्र-छात्राओं को बुलाया गया। यह पहला मौका था जब विवि के दीक्षांत में हाईस्कूल व इंटरमीडिएट के छात्र-छात्राएं मौजूद थे। इंटर के छात्र उदय ने कहा कि पहली बार दीक्षांत का कार्यक्रम देखा बहुत अच्छा लगा। वहीं, सुरभि, प्रियांशु, अभिषेक, पूर्णिमा भी दीक्षांत को लेकर आपस में चर्चा करते नजर आए।

आगामी सत्र से घर पहुंचेगी डिग्री

दीक्षांत समारोह के दौरान कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने बताया कि छात्र-छात्राओं की डिग्री आगामी सत्र से घर पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी। यदि कोई यहां आकर डिग्री नहीं ले पाता तो उसे कॉलेज या विवि के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। इसके अलावा उन्होंने बताया कि आगामी सत्र से डिग्री में मां का नाम भी लिखवाया जाएगा। इसके अलावा परीक्षा तंत्र में सुधार के लिए पूरी तरह स्वचालित डिजिटल तंत्र विकसित किया जा रहा है, जिससे अंक पत्र और प्रमाण पत्र डिजिटली मिल सकें।

गूगल व माइक्रोसॉफ्ट में प्लेसमेंट की तैयारी

विवि छात्र-छात्राओं को बेहतर प्लेसमेंट देने के लिए गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनियों से संपर्क कर रहा है। कुलपति ने बताया कि जल्द ही इसका लाभ छात्र-छात्राओं को मिलेगा। इन कम्पनियों के सहयोग से सभी संस्थानों के लिए केंद्रीयकृत प्लेसमेंट ड्राइव चलाई जाएगी। इसके अलावा कॉलेजों में गुणवत्तापरक शिक्षकों की नियुक्ति के लिए अलग से शिक्षक पात्रता परीक्षा का आयोजन होगा।

मेधावियों ने कहा- सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं

बनना है सॉफ्टवेयर डवलपर

मेरा सपना सॉफ्टवेयर डवलपर बनने का है। इसलिए मैंने बहुत मेहनत की थी। सोचा था कि मेडल मिलेगा पर मुझसे ज्यादा मेरे साथियों, शिक्षकों और घरवालों को विश्वास था कि गोल्ड मेडल मिलेगा। इस समय टीसीएस में नौकरी कर रही हूं। पापा सुभाष चंद्र तिवारी और मां रजनी तिवारी के साथ ही बाकी घरवालों को मैं अपनी सफलता का श्रेय देना चाहती हूं।

- प्रियांशा तिवारी, गोल्ड मेडल, आईटी, श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी

बैंकिंग फील्ड में जाना है लक्ष्य

शुरुआत से ही मेरे नंबर बहुत अच्छे थे इसलिए टॉप करने की उम्मीद थी। शनिवार को मेडल मिलते ही खुशी दोगुनी हो गई। एमबीए के बाद मेरा लक्ष्य बैंकिंग फील्ड में जाना है। इसके लिए बराबर तैयारी चल रही है। मेरी सफलता में मेरे पापा अजय अवस्थी और मां कनकलता अवस्थी का योगदान सबसे ज्यादा है।

- प्रियंका अवस्थी, गोल्ड मेडल, एमबीए, श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज, लखनऊ

आईएएस बनकर करनी है सेवा

कांस्य पदक मिलने पर मुझे खुशी है पर मेरा लक्ष्य आईएएस में सेलेक्ट होकर समाज की सेवा करना है। इसके लिए मैं प्रयास कर रही हूं। फिलहाल न्यू इंडिया एश्योरेंस में जॉब कर रही हूं। मेरे टीचर्स के साथ ही मेरे पिता शिवजी प्रसाद और मां राधिका देवी ने मेरी सफलता में सबसे ज्यादा योगदान दिया है।

- नमिता, ब्रॉन्ज मेडल, एमबीए श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज, लखनऊ

लक्ष्य तय कर करें पढ़ाई

सफलता के लिए कड़ी मेहनत का कोई तोड़ नहीं होता है। मैं हमेशा से इसका पालन किया है। शायद इसी वजह से बीटेक सिविल इंजीनियरिंग में मुझे गोल्ड मेडल मिला है। मेरे पिता रियासत हुसैन हेल्थ सुपरवाइजर हैं जबकि मां तसलीम जेहरा हाउस वाइफ हैं। इन दोनों के साथ ही मेरे टीचर्स ने भी मेरी सफलता के लिए बहुत कोशिश की है। मैं जॉब करके अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूं।

- तहजीब जेहरा, गोल्ड मेडल बीटेक सिविल, श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज, लखनऊ

जॉइन करनी है सिविल सेवा

मेरे पिता नजर अशफाक ने मेरी पढ़ाई के लिए काफी कष्ट झेले हैं। पढ़ाई में मेहनत करके मैं उनके सपनों को पूरा करना चाहती हूं। मेरी प्रेरणा मेरे चाचा सुलतान अशफाक सिद्दीकी हैं। उनकी तरह मैं भी बीटेक के बाद मैं सिविल सर्विसेज जॉइन करना चाहती हूं। फिलहाल मैं टीसीएस में जॉब भी कर रही हूं।

- शमा परवीन, गोल्ड मेडल, बीटेक इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स, श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज

इंडियन इंजीनियरिंग सर्विसेज में जाना लक्ष्य

एक ही लक्ष्य है इंडियन इंजीनियरिंग सर्विसेज में जाना। इसलिए बीटेक के बाद तैयारी शुरू कर दी है। पहले तो पता ही नहीं था कि हमें भी दीक्षांत में आना है। अचानक कुछ ही दिन पहले पता चला कि इस बार स्वायत्तशासी कॉलेज के टॉपर्स को भी यहां बुलाया गया है। काफी अच्छा लगा यहां मेडल पाकर। पिता विनोद कुमार बिजनेसमैन और मां तृप्ति आर्या गृहिणी हैं।

- प्रज्ञा आर्या, इलेक्ट्रिकल इंजी., एमएमएमयूटी, गोरखपुर, ब्रॉन्ज मेडल (निवासी लखनऊ)

रामस्वरूप कॉलेज ने बढ़ाया मेधा का मान

लखनऊ। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में स्थान बनाने और मेडल पाने वाले मेधावियों का शनिवार को श्रीराम स्वरूप मेमोरियल ग्रुप ऑफ प्रोफेशनल कॉलेजेस में सम्मान किया गया। इस अवसर पर ग्रुप उपाध्यक्ष संस्थान के अधिशासी निदेशक पंकज अग्रवाल ने मेडल पाने वाले तहजीब जेहरा-बीटेक सिविल, प्रियांशा तिवारी- बीटेक आईटी, प्रियंका अवस्थी-एमबीए, शमा परवीन- बीटेक इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स और नमिता-एमबीए को सम्मानित किया। इसके साथ ही मेरिट सूची में स्थान बनाने वाले 20 अन्य मेधावियों को भी पुरस्कृत किया गया। कॉलेज की चेयरपर्सन पूजा अग्रवाल और निदेशक ने सभी शुभकामनाएं दीं।